PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✲ बानी

वर्ष - नौंवा | अंक-चौथा | अगस्त-2011 | मासिक पत्रिका

5

प्यार का संदेश
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा महाराज
कृपाल की याद में एक संदेश

7

मैं तो कृपाल से विछुड़ के रोई रे
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
के मुखारविंद से (केलीफोंनिया)

23

विछोड़े की आग
(बुल्लेशाह की बानी)
सतसंग - सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(न्यू हैम्पशायर, अमेरिका)

41

नाम से नदी पार
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**
फोन - 9950 556671 (राजस्थान) 9871 50 1999 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** फोन - 9928 925304 उप सम्पादक : **नंदिनी**
अनुवादक : **मास्टर प्रताप सिंह** सहयोग : **परमजीत सिंह** मुख्य पृष्ठ सज्जा : **प्रथम सरधारा**
सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 113 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

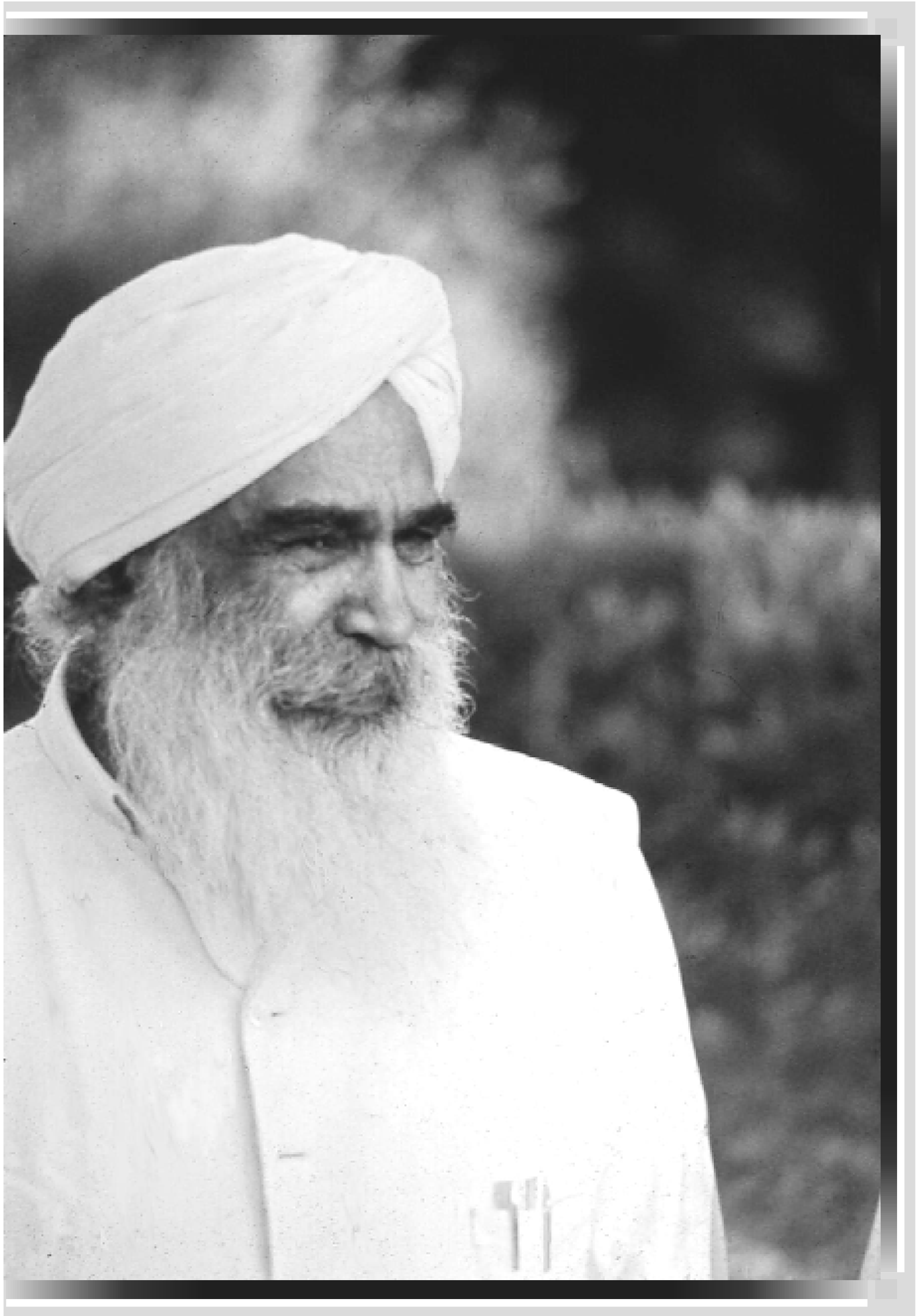

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा महाराज कृपाल की याद में एक संदेश

प्यार का संदेश

प्यारे सतसंगी भाईयो और बहनों,

सतगुरु कृपाल ने हमें नहीं छोड़ा आप सदा हमारे साथ हैं। आप जीवन के हर रूप में हमारी रक्षा कर रहे हैं। सतगुरु कभी मरते नहीं सदा अमर हैं और इस संसार से कभी आलोप नहीं होते। वह केवल शरीर ही छोड़ते हैं हमें अब भी आपकी उपस्थिति महसूस हो रही है। सतगुरु की शिक्षा पर अमल करने के लिए हमें एक–दूसरे के साथ प्यार करना चाहिए।

भजन–अभ्यास हमारी आत्मा को शान्ति देता है अगर हमारी आत्मा शान्त होगी तभी हम एक–दूसरे से प्यार करेंगे। सभी सतसंगी आपस में भाई–बहन की तरह जुड़े हुए हैं। हमें एक–दूसरे की कद्र करनी चाहिए आपस में प्यार बनाए रखना चाहिए। महाराज कृपाल ने हमें सदा एक–दूसरे के साथ प्यार करने का संदेश दिया है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम आपके संदेश पर ध्यान दें और आपकी बताई हुई शिक्षा पर अमल करें।

अगर हम किसी की निन्दा करते हैं या किसी के लिए बुरा सोचते हैं तो इसमें हमारा बहुत नुकसान होता है। हम जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप हमारे खाते में जमा हो जाते हैं और हमारे अच्छे कर्म उसके खाते में जमा हो जाते हैं। जो आदमी दूसरों में दोष देखता है वह सदा नुकसान उठाता है इसलिए हमें कभी ऐसा नहीं करना चाहिए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''दूसरों की निन्दा करके हम अपनी जीभ, मुँह और दिमाग गंदा करते हैं; दूसरों में दोष निकालकर हम नर्कों में जाने का रास्ता बना रहे हैं।''

महाराज सावन सिंह जी ने भी मुझे यही बताया था कि दूसरों की बुराई करने में कोई स्वाद नहीं है। आप कहा करते थे कि स्वाद या आनन्द तो इन्द्रियों में है; निन्दा करने में आनन्द कहाँ?

प्यारे भाई–बहनों! मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप किसी सतसंगी या अन्य आदमी की निन्दा न करें क्योंकि जब गुरु 'नामदान' देता है तो वह सेवक के अंदर बैठ जाता है इसलिए जब आप किसी शिष्य की निन्दा करते हैं तो यह सतगुरु की ही निन्दा करना है। मैं आपसे किसी की निन्दा न करने और भजन–अभ्यास में अधिक समय देने के लिए विनती करता हूँ। भजन–सिमरन करना आपके जीवन के लिए बहुत अच्छा होगा।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सैंकड़ो काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजारों काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठ जाएं। तन की खुराक अन्न और आत्मा की खुराक भजन–अभ्यास है।''

मैं आपसे अभ्यास में अधिक समय देने, सतसंग में हाजरी लगाने और किसी की निन्दा न करने की विनती करता हूँ। निन्दा करने से आपको भजन–अभ्यास करने में कोई मदद नहीं मिलेगी। निन्दा वही करते हैं जो भजन–अभ्यास नहीं करते। आपने निन्दा और बुराई से बचना है; भजन–अभ्यास में ज्यादा से ज्यादा समय लगाना है। मैं आशा करता हूँ कि मैंने जो कुछ कहा है आपने समझ लिया होगा।

दास अजायब सिंह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

मैं तो कृपाल से विछुड़ के रोई रे

केलीफोर्निया

मैं दयालु परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ जिसने अपना असली घर सच्चखंड और अपने असली रूप 'शब्द' को छोड़ा और इंसानी चोला धारण करके हमारे बीच रहा। आपके माता–पिता ने आपका प्यारा नाम 'कृपाल' रखा। कृपाल का अर्थ है दया करने वाला। कृपाल ने अपनी दया की वर्षा की और हर व्यक्ति को प्यार का संदेश दिया।

आपने हमें सिखाया कि हम एक ही परमात्मा के बच्चे हैं। हम सब एक ही आसमान के नीचे और एक ही धरती पर रहते हैं; हम सबको उसी परमात्मा ने पैदा किया है इसलिए हमें हर एक के साथ प्यार करना चाहिए। हुजूर महाराज कृपाल ने अपनी दया की वर्षा करने में कोई कसर नहीं रखी।

महाराज कृपाल सदा कहा करते थे कि अब वस्तु देने वाला आ गया है, इसे ले लें। जो आपकी दया प्राप्त करने के लिए तैयार थे वे ही उस महान आत्मा को समझ सके और उन्होंने अपने बर्तन के मुताबिक ही आपकी दया प्राप्त की। हम यह भी कह सकते हैं कि कृपाल आँख वाला था और हम आपके सामने अंधे थे। आपने खुद ही हमें बुलाया और अपनी अंगुली पकड़वाई तभी हम आपको पहचान सके।

आपकी जुबान पर सदा प्यार का शब्द था और जो कुछ आपने बोला वह प्यार था। आप संसार के सभी व्यक्तियों को प्यार द्वारा ही

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक साथ एकत्रित करना चाहते थे। आप हर व्यक्ति को प्यार से जोड़ने में खुश थे; चाहे वह किसी देश या धर्म का था।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि हम इस संसार में परमात्मा की भक्ति करने के लिए आए हैं। आपने हमसे सदा परमात्मा की भक्ति करवाई, हम परमात्मा की भक्ति तभी कर सकते हैं अगर हम परमात्मा की रची सृष्टि से प्यार करें। हम परमात्मा की भक्ति करने का दावा तो करते हैं लेकिन हमें परमात्मा से प्यार करने की बजाय उसकी रची सृष्टि से अधिक प्यार करने की जरूरत हैं क्योंकि परमात्मा ने ही सारी सृष्टि को पैदा किया है। जब तक हम दूसरों के प्रति ईर्ष्या–द्वेष नहीं छोड़ते तब तक हम परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते।

परम दयालु कृपाल प्यार के महासागर थे। जब तक हम किसी से प्यार नहीं करते तब तक हम परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते। हमें आपकी शिक्षाओं पर अमल करना चाहिए, आपकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

आज वह दिन है जब सर्वशक्तिमान कृपाल ने अपनी सांसारिक यात्रा को पूरा किया, आप अपने असली घर वापिस गए। हमें सुख–दुख तभी तक होता है जब तक हम इस शरीर में हैं। केवल यह शरीर ही थकता है। अब आपने शरीर छोड़ दिया है और आप 'शब्द' में लीन हो चुके हैं। अब आपको कोई दुख नहीं, कोई थकान नहीं है बेशक हम लोगों ने आप पर अपने भारी कर्मों का बोझ डाला। हमने आपको बहुत दर्द और तकलीफें दी। अब आपको कोई दर्द और तकलीफ नहीं है क्योंकि आप देह में नहीं है, 'शब्द' में लीन हो चुके हैं; 'शब्द' की कोई देह नहीं होती।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जो लोग कहते हैं कि अब कृपाल थक गया है वे यह नहीं जानते कि कृपाल कहाँ गया है? कृपाल उस घर गया है जहाँ थकावट नहीं होती। अब कृपाल 'शब्द' बन चुका है। क्या 'शब्द' को कोई तकलीफ हो सकती है, क्या 'शब्द' को कोई थकावट हो सकती है? 'शब्द' जब से उत्पन्न हुआ है सदा ही शक्तिशाली व आनन्दपूर्ण रहा है।

सतगुरु मेरा सदा सदा न आवै न जाय।
वह अविनाशी पुरुष है सब में रहा समाय।

प्यारेयो! मैं सदा कहता आया हूँ कि मेरे परम दयालु कृपाल प्यार के महासागर थे और मैं प्यार का पुजारी रहा हूँ। आपने मुझे प्यार ही दिया क्योंकि मैं बचपन से ही प्यार के लिए तरस रहा था और जब आप मुझे मिले तो आपने मुझे प्यार ही दिया।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि मैं प्यार के लिए तड़फ रहा था प्यार के लिए प्यासा था। मैं जिंदगी भर आपकी तलाश करता रहा आप आए तो मेरी तलाश पूर्ण हो गई; जब समय आया परम दयालु कृपाल स्वयं चलकर मेरे घर आए और आपने मेरी प्यास बुझाई। आपने मुझे प्यार का पानी दिया। मुझे आप पर पूरा भरोसा था, मैंने आपसे कोई सवाल नहीं किया मैं प्यार का पानी चाहता था; आपके पास प्यार का पानी था आपने प्यार का पानी देकर मेरी प्यास बुझाई।

जो लोग संगीत नहीं सीखना चाहते चाहे! संगीत का बादशाह तानसेन आकर उनके जूते झाड़े तो भी वे उसकी कद्र नहीं करेंगे लेकिन जो संगीत की कला सीखना चाहते हैं वे तानसेन के पास जाकर जूते झाड़ेगे क्योंकि उनमें संगीत की कला सीखने की तड़फ है।

जैसे पिता अपने बच्चे से प्यार करता है वैसे ही मेरे सतगुरु ने मुझसे प्यार किया। आप मुझे अपनी गोद में बिठाया करते थे। आप मुझे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अपने साथ खाना खिलाते थे। मैंने आपसे जो प्यार प्राप्त किया उसका वर्णन मैं इस संसार को नहीं बता सकता।

मेरे जवान होते ही मेरे माता–पिता ने मुझ पर शादी करने का दबाव डाला लेकिन मेरा शादी करने का कोई इरादा नहीं था। मैं बचपन से ही जानता था कि मेरे अंदर कोई ताकत बैठी हुई है जो मेरे सामने बड़ी समस्याएं और भ्रम पैदा कर रही हैं। मैंने सोचा! अगर मैंने अपने अंदर बैठी इस ताकत को काबू नहीं किया और शादी करवा ली तो मुझे एक और ताकत का मुकाबला करना पड़ेगा।

जब मैं घर छोड़कर परमात्मा की खोज के लिए चल पड़ा तब मेरी माता मेरे साथ तीन मील तक चलती रही। मेरी माता ने कहा, ''प्यारे बेटा! तुम शादी कर लो उसके बाद मैं तुम्हें भक्ति करने से नहीं रोकूंगी।'' मैंने अपनी माता से कहा, ''अगर मैंने शादी करवा ली तो तुम्हें समझाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी क्योंकि जब मैं शादी करवा लूँगा तो समझाने वाला मेरे साथ ही होगा अगर मेरी तकदीर में शादी लिखी होगी तो वह खुद ही चलकर मेरे पास आ जाएगा।''

महाराज जी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी देना कुदरत का असूल है।'' भारत में जब दूल्हा दुल्हन से शादी करने उसके घर जाता है तो वह दुल्हन के लिए गहने और कपड़े आदि लेकर जाता है। इसी तरह जब सतगुरु कृपाल मुझसे शादी करने आए तो आप मेरे लिए अंगूठी और कपड़े लाए। आपने भारतीय परम्परा के अनुसार सब रीति–रिवाज किए।

जब महाराज कृपाल ने चोला छोड़ा तो इस गरीब फकीर के साथ क्या हुआ, इसकी क्या हालत हुई? मैं आपको इस भजन में बताऊंगा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कि जब गुरु चोला छोड़ देता है तब सेवक देह रूपी दर्शनों का लाभ प्राप्त नहीं कर सकता।

इस दिन आपने अपनी सांसारिक यात्रा पूरी की। अब आप वापिस अपने निज घर जा चुके हैं और सुखो के मंडल में रह रहे हैं। हमें आपकी शिक्षा को याद रखना है। हमने वह करना है जो आप हमसे करवाना चाहते थे। आपने हमें बताया कि अपने अंदर प्यार पैदा करें इसलिए हमने एक–दूसरे के साथ प्यार करना है; हमने सतगुरु कृपाल से प्यार करना है। आपने हमें 'नामदान' दिया है हमारा फर्ज बनता है कि हम लगातार सिमरन करें और ध्यान को बाहर की चीजों से हटाएं। अपने फैले ख्याल को अपनी आँखों के पीछे लाएं; यह वह स्थान है जहाँ आप हमारा इंतजार कर रहे हैं।

यह भजन तड़फती और दुःखी आत्मा ने गाया है। जब सतगुरु ने चोला छोड़ा तो इस दुःखी आत्मा को यह भी होश नहीं था कि जूते कहाँ हैं, पायजामा पहना हुआ है या नहीं! उस समय मुझे अपने शरीर की भी होश नहीं थी। मैं उस समय गांव किल्लयांवाली चला गया वहाँ मुझे कोई नहीं जानता था मैंने वह दुख का समय वहाँ बिताया। मैं पिछले साल वहाँ गया तो उन लोगों को मेरे बारे में जानकारी हुई। उन्होंने मुझसे सतसंग करने के लिए कहा। उन लोगों ने कहा कि हम आप पर निर्भर हैं। चाहे! आप हमें 'नामदान' न दें फिर भी हम आपको अपना गुरु मानते हैं। जब हजरत सुलतान बाहु के गुरु ने चोला छोड़ा तो उस समय हज़रत बाहु ने यही कहा:

इह दुःख हमेशा रहसी बाहू, मैं रोंदड़ी ही मर जावां हू।

जब गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ा तो आपके शिष्य गुरु अंगददेव जी ने भी यही कहा:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जिस प्यारे सिउ नेहु, तिस अग्गे मर चलीऐ।
धृग जीवण संसार, ताके पाछै जीवणां।

मैं अक्सर कहा करता हूँ:

मेरे जिड़डा होवे दुःखी ओसनूं सुणावा दुःख।
सदा सुखी रहे जो ओहनूं दुःख दी पछाण की।
खुसरे की जाणदें ने मैथुनां दे स्वाद ताई।
हाफिज बेचारयां ने पढ़ना कुरान की।
तेरे नाल बीतदी है तूं ही जाणदा अजायब सिंह।
संसार छड देवे गुरु सेवक दा ऐतो उत्ते मर जाण की।

प्यारयो! जो गुरु के वियोग के दुख को महसूस करते हैं और उस वियोग में तड़फ रहे होते हैं वे किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष नहीं रखते क्योंकि उनके पास इसके लिए समय नहीं होता। बचपन में मैंने एक भजन लिखा था उसकी आखिरी लाइनें थी:

इक ना लिखी मेरे सतगुरु दा विछोड़ा।
भावें छुट जाए सारा संसार लिख दे।

हे तकदीर लिखने वाले चाहे! मुझे सारा संसार छोड़ना पड़े लेकिन मेरी किस्मत में सतगुरु का विछोड़ा न लिखना। हमें सतगुरु की याद में प्यार के आँसू बहाने चाहिए और प्यार का सबक सीखना चाहिए जो आपने हमें सिखाया है।

जब सेवक का प्यारा सतगुरु संसार छोड़ देता है तब सेवक के पास रोने के अलावा कोई चारा नहीं होता। चाहे कोई सेवक को दुनियां का राजपाट भी देना चाहे तो वह उस तरफ ध्यान नहीं देता। जिस तरह घड़ी की सुईयाँ घूमकर वापिस उसी जगह आ जाती है उसी तरह सेवक सदा सतगुरु की तरफ घूमता रहता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मैं तो, कृपाल से विछुड़ के, रोई रे, (2)

1. पीया से विछुड़ के, इस जग आई, दर–दर भटकी, ठोकर खाई, (2)
बात ना पूछे कोई रे, मैं तो कृपाल .....

2. बिन पीया के मैं, तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं, तरस रही हूँ, (2)
बैरन दुनियां होई रे, मैं तो कृपाल .....

3. आऊं–जाऊं, मैं दुःख पाऊं, विछुड़ पीया से, मैं पछताऊं, (2)
काल देश में खोई रे, मैं तो कृपाल .....

4. संग बसे मेरे, मैं क्या जानूं, मैं पगली, पिर ना पहचानूं, (2)
कृपाल से बात ना होई रे, मैं तो कृपाल .....

5. कोई ना जाने, देश पराया, तोर दित्ता मुड, लैण ना आया, (2)
ना जीवां ना मोई रे, मैं तो कृपाल .....

6. भुल्ल गयों वे, तूं बेदर्दा, विछड़ां तैथों, दिल नहीं करदा, (2)
कृपाल बगैर कित्थे ढोई रे, मैं तो कृपाल .....

7. राह भुल्ल गई मैं, किस राह आंवां, आ के लै चल, तरले पांवां, (2)
मुश्किल डाडी होई रे, मैं तो कृपाल .....

8. कृपा करो, कृपाल सुनो रे, दाते दीन, दयाल सुनो रे, (2)
मैं दुःखयारी रोई रे, मैं तो कृपाल .....

9. मैं पापण नूं, गल नाल ला लै, अपने बेड़े, विच बिठा लै, (2)
'अजायब' कृपाल दी होई रे, मैं तो कृपाल .....

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

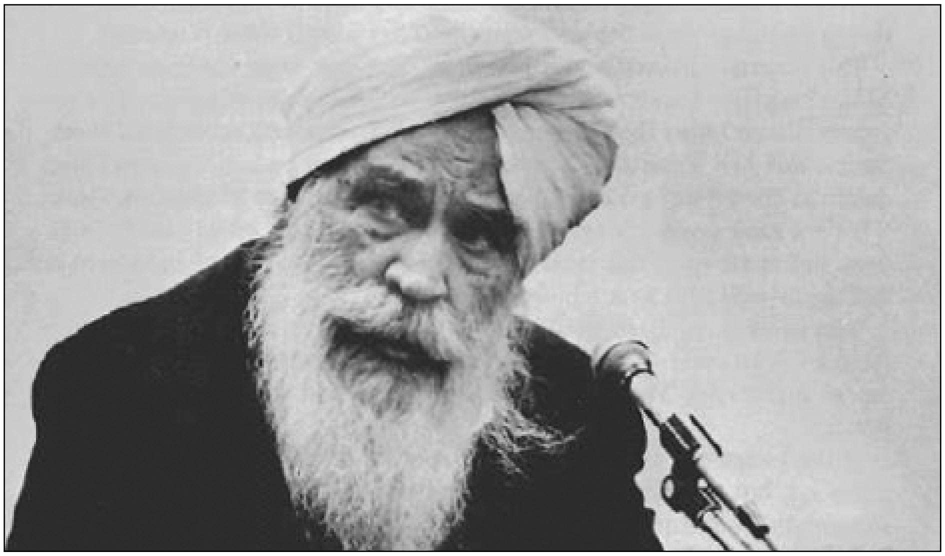

कृपाल गुरु आजा (2), संगत पुकार दी,
तेरे हत्थ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी, (2)

1. *संगत पुकार दी है, दोवें हत्थ जोड़ के,*
कित्थे चले गयों दाता, संगत नूं छोड़ के, (2)
देंदा रह दिखाली सदा, मेरी ऐह पुकार जी, तेरे हत्थ .....

2. *संगत दे वालिया, देर ना लगावीं वे,*
सुणके आवाज साडी, छेती–छेती आवीं वे, (2)
दर्शनां नूं बैठी, संगत तैयार जी, तेरे हत्थ .....

3. *संगत दा वैद्य, तेरे हत्थ च दवाई वे,*
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे, (2)
जोगे नूं बचाया बण, आप पहरेदार जी, तेरे हत्थ .....

4. *नानकी पुकारेया, तूं झट विच आया सी,*
पुकार वाला फुल्का, प्यार नाल खाया सी, (2)
ओसे तरहां आजा तूं, मैनूं ना विसार जी, तेरे हत्थ .....

5. *सुणदा पुकार दाता, मुढ तों तूं आया वे,*
मक्खण लुभाणे दा, जहाज बन्ने लाया वे, (2)
संगत नूं बचा ले, ऐह पुकार 'अजायब' साध दी, तेरे हत्थ .....

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतगुरु के चोला छोड़ने के बाद मैं जहाँ जाकर रह रहा था, वहाँ मैं किसी के घर खाना खाने नहीं जाता था। आप जानते हैं कि शरीर को खाने की भी जरूरत होती है। वहाँ मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। लगातार रोने से मेरी एक आँख खराब हो गई और मुझे आँख का ऑप्रेशन करवाना पड़ा।

उसके बाद मैं संगरिया में नहरी विभाग के विश्राम गृह में आकर रहने लगा। महाराज जी के चोला छोड़ने के बाद मैं बिना बताए ही चला आया था। किसी को अन्दाजा नहीं था कि मैं कहाँ हूँ? पाठी जी को तड़फ उठी। वह मेरी तलाश में दो जोड़ी कपड़े लेकर घर से चल पड़े। पाठी जी ने संगरिया पहुँचकर नहरी विभाग के अफसरों से मेरे बारे में पूछा। मेरे बारे में केवल एक अफसर की पत्नी ही जानती थी।

मैने वहाँ यह कह रखा था कि मेरे बारे में किसी को न बताया जाए क्योंकि मैं इस संसार में बाहर नहीं आना चाहता था, मुझे इस संसार से कोई लेना–देना नहीं था। हालांकि उस अफसर की पत्नी मेरे बारे में जानती थी लेकिन उसने पाठी जी को कुछ नहीं बताया। उस अफसर ने जब पाठी जी को रोते हुए देखा तो अपनी पत्नी से कहा कि तुमने इसे क्यों नहीं बताया कि सन्तजी हमारे विश्राम गृह में हैं? तब उसने पाठी जी को बताया और पाठी जी मेरे पास आए।

मैं सारा दिन विश्राम गृह के अंदर रहता था और रात होने पर बाहर आया करता था। मैं वहाँ के एक परिवार के घर जाया करता था। जब पाठी जी विश्राम गृह के पास आए तो उन्होंने बच्चों से मेरे बारे में पूछा कि यहाँ कोई रहता है? उन बच्चों ने जबाब दिया कि यहाँ एक सन्त रहते हैं वह शाम को ही बाहर आते हैं। पाठी जी ने शाम होने का

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इन्तजार किया। मैंने उनसे आने का कारण पूछा तो पाठी जी ने कुछ कहने की बजाय रोना शुरू कर दिया। मेरा भी दिल भर आया, मैं अपने आपको नहीं रोक सका; मैं 77 आर.बी. आ गया।

उसके बाद मैंने निश्चय किया कि मैं इस संसार में बाहर नहीं आऊंगा, मुझे इस संसार से कुछ लेना देना नहीं था। मैंने सोचा था कि मैं सदा जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास करूंगा और उसकी याद में रोकर जीवन बिता दूंगा इसलिए मैंने लोगों को अपना रहने का स्थान बताने से मना कर दिया ताकि कोई भी मुझसे मिलने न आ सके।

महाराज जी की प्रेरणा से रसल परकिन्स मुझसे मिलने आया, उसने मुझे बाहर इस संसार में निकाला। वह जब मुझसे मिलने आ रहा था और मेरे घर से पचास–साठ मील दूरी पर था तब लोगों ने उसे रोक दिया कि मैं किसी से नहीं मिलता। वह अपने अंदर प्यार लेकर आया था मैंने भी उसके अंदर प्यार देखा और उससे मिला। मैंने संसार में बाहर न आने का इरादा किया हुआ था लेकिन प्रेमियों के प्यार ने मुझे बाहर खींच लिया। उसके बाद कई प्रेमी मुझसे मिलने आए और यहाँ भी मुझे आपके प्यार ने खींच लिया।

मैं सदा राजस्थान में ही रहा। मैंने अपनी जिंदगी का अधिकतर हिस्सा जमीन के नीचे अभ्यास में ही बिताया है। मुझे यूरोप, अफ्रीका या अमेरिका में कोई नहीं जानता था, भारत में भी ज्यादा लोग मुझे नहीं जानते थे क्योंकि मैं कभी मुम्बई या दिल्ली नहीं गया था। मैं जब बाबा बिशनदास से मिला तो मैंने उनके कहे अनुसार अठारह साल जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया। उसके बाद महाराज जी मेरे घर आए उन्होंने मुझ पर अपनी दया की भरपूर वर्षा की। उन्होंने भी मुझे कहीं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

न जाकर केवल भजन करने के लिए कहा। जब कभी मुझे दर्शनों की आवश्यकता होती आप स्वयं चलकर दर्शन देने आते। मैंने अपनी जिंदगी में अभ्यास किया है इसलिए मैं जानता हूँ कि भजन–अभ्यास करना कितना कठिन है और हमें कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है।

पहले समय में राजा अपराधियों को सजा देने के लिए उनके हाथ –पैर बधँवा देते फिर जंगली कुत्तों को छोड़ देते; कुत्ते अपराधियों के शरीर को काटते थे इस तरह की तकलीफें सहन करके अपराधी मर जाते थे। आप जब भजन करेंगे तो आपको बहुत दर्द सहन करना पड़ेगा क्योंकि जब हमारी आत्मा एक चक्र को पार करती है तो हम काफी दर्द महसूस करते हैं जब आत्मा हृदय चक्र को पार करती है तो उस समय ऐसा दर्द महसूस होता है जैसा कि मृत्यु के समय होता है।

सतगुरु ने मुझे वचन दिया था कि तुम भजन करो मैं स्वयं तुमसे मिलने आऊंगा। गुरु को अपने शिष्य से मिलने के लिए किसी से इज़ाज़त लेने की जरूरत नहीं पड़ती। यह गुरु और शिष्य के बीच की बात होती है। आप वायदे के पक्के रहे, सदा मुझसे मिलने आए।

महाराज कृपाल की लेखनियों में ऐसे लोगों का जिक्र आता है जो यह कहते हैं कि हमने गुरु के साथ बहुत समय बिताया है बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। आप अक्सर कहा करते थे कि मेरे साथ रहने वाले लोग मेरा खून चूसते हैं।

आप महाराज सावन सिंह जी की रचनाओं में पढ़ सकते हैं कि एक बार किसी आदमी ने महाराज सावन से पूछा कि क्या मैं आपके आश्रम में आकर रह सकता हूँ? महाराज सावन ने कहा, ''जब तक आप दसवां द्वार पार न कर लें तब तक आपको आश्रम में रहने के बारे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

में सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि दसवें द्वार में पहुँचकर ही आप गुरु की शान के बारे में जान सकते हैं।'' जब आप आश्रम में आकर रहते हैं तब आपके अंदर से गुरु के दर्शन की भूख चली जाती है। गुरु कभी आश्रम में रहने वाले लोगों पर खुश होते हैं उनके साथ प्यार का व्यवहार करते हैं और कभी–कभी उन लोगों को डाँटना भी पड़ता हैं

आश्रम में रहने से कई कमियाँ आ जाती हैं। आश्रम में रहने वाले लोगों के अंदर घमंड आ जाता है। आश्रम में रहकर आप रोजी–रोटी नहीं कमा सकते, आप दूसरों के पैसों पर निर्भर हो जाते हैं जो आपको किसी न किसी रूप में चुकाना पड़ता है। आप आश्रम में रहकर सेवा करते हैं तो लोग आपकी प्रशंसा करते हैं वे आपके गुण लेकर आपके पास क्रोध, अंहकार, नफरत छोड़ जाते हैं। आश्रम में रहने से आपके अंदर साधु बनने का अंहकार हो जाएगा। गृहस्थी माथा टेक कर आपको लूट लेंगे। गुरु के लिए दूर या नज़दीक का फर्क नहीं पड़ता। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बसे बनारसी शिष्य समुंद्र तीर।
एक पल बिसरे नहीं जो गुण होए शरीर।

गुरु लाखों मील दूर हो तो भी आपकी आत्मा को शब्द पर सवार करके अपने पास ले जा सकता है। आप एक पल में ही गुरु के पास जाकर वापिस आ सकते हैं।

मेरे बारे में लोगों को कैसे पता चला? यह केवल महाराज कृपाल के कहे गए वचनों के कारण ही हुआ। यह आपका वाक था कि तुम्हारे अंदर से खुशबू आएगी और वह खुशबू सात समुंद्र पार चली जाएगी। अमेरिका और यूरोप के लोग तुम्हें हवाई जहाजों पर सैर करवाएंगे ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उस समय किसी ने भी आपके वचनों पर विश्वास नहीं किया। एक आदमी ने तो यह भी कहा कि महाराज जी! आप कहते हैं कि लोग इसे हवाई जहाजों में सैर करवाएंगे लेकिन इन्हें कोई जीप में तो बिठाता नहीं। जब सन्त ऐसे वचन कहते हैं उस समय हम लोग उनके वचनों पर विश्वास नहीं करते। महाराज जी ने कहा, ''यह परमात्मा के दरबार का हुक्म था आप विश्वास करें या न करें। ऐसा समय आएगा जब सभी लोग इस पर विश्वास करेंगे।''

मेरे यह कहने का भाव है कि मैं इस विश्व–यात्रा में गुरु के रूप में नहीं एक सेवादार के रूप में आया हूँ। मैं अपने प्यारे सतगुरु का सेवक हूँ। मैंने सदा ही अपने आपको संगत का छोटा सा सेवादार कहा है। मैं तो संगत के जूते साफ करने वाला हूँ, हो सकता है कि मैं पूरी तरह से जूते साफ करना भी न जानता हूँ।

जब रसल परकिन्स मेरे पास आया तब मैंने इससे कई वायदे करवाये। जिसमें से एक वायदा यह था कि यह *सन्तबानी मासिक पत्रिका* को सदा आलोचना व निन्दा से मुक्त रखेगा। जब से इस पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ है आपने इसमें कभी भी किसी आलोचना का शब्द नहीं पढ़ा और भविष्य में भी यह पत्रिका इसी तरह रहेगी।

मैं रसल परकिन्स से बहुत खुश हूँ कई समस्याओं के बाद भी उसने अपने वायदे को निभाया और पत्रिका को स्वच्छ और पवित्र रखा है। मैं आपको जो बता रहा हूँ यह सच है अगर कोई दूसरों के प्रति ईर्ष्या या द्वेष रखता है या किसी की निन्दा करता है तो सतगुरु उसके लिए दरवाजा नहीं खोलेंगे। सन्तमत राजनीति नहीं। सन्तमत वह मार्ग है जिस पर चलकर हमने अपनी ज़िंदगी में सुधार करना है; हमने अपने अवगुणों ओर दूसरे के सद्गुणों को देखना है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पिछले साल मैंने एक भजन लिखा है जो शिष्य के दृढ़निश्चय का वर्णन करता है। प्यार हमें कायर नहीं बनाता। जो सतगुरु से प्यार करते हैं वे सतगुरु पर अधिकार रखते हैं:

देजा तू दर्श हुण लाईयां काहनूं देरियां, (2)
दर तेरे ते, आंवांगे जी नारा शाह कृपाल दा, लांवांगे, (2) (2)

1. देजा खां नजारा, आ के सावन दे प्यारेया, (2)
लब्भया ना सानूं, असीं बहुत तैनूं भालया, (2)
पार तेरे ही सहारे, हो जांवांगे,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

2. तुर गयो साईयां, साथों हो के काहनूं दूर जी, (2)
केरां तां दिखा जा, ऐहो सावां जेहा नूर जी, (2)
तेरे बिना होर की, ईलाज बणावांगे,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

3. वांग मंसूर असीं, पक्के हो के खड़ांगे, (2)
तेरे ही विछोड़े विच, सूली उत्ते चढ़ांगे, (2)
तेरे बिना ठोकरां, खांवांगे ,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

4. असीं गुनाहगार बाबा, तैनूं हां पुकार दे, (2)
सारी संगत खड़ी है, विच मझधार दे, (2)
'अजायब' कृपाल बिना, ठोकरां खांवांगे ,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

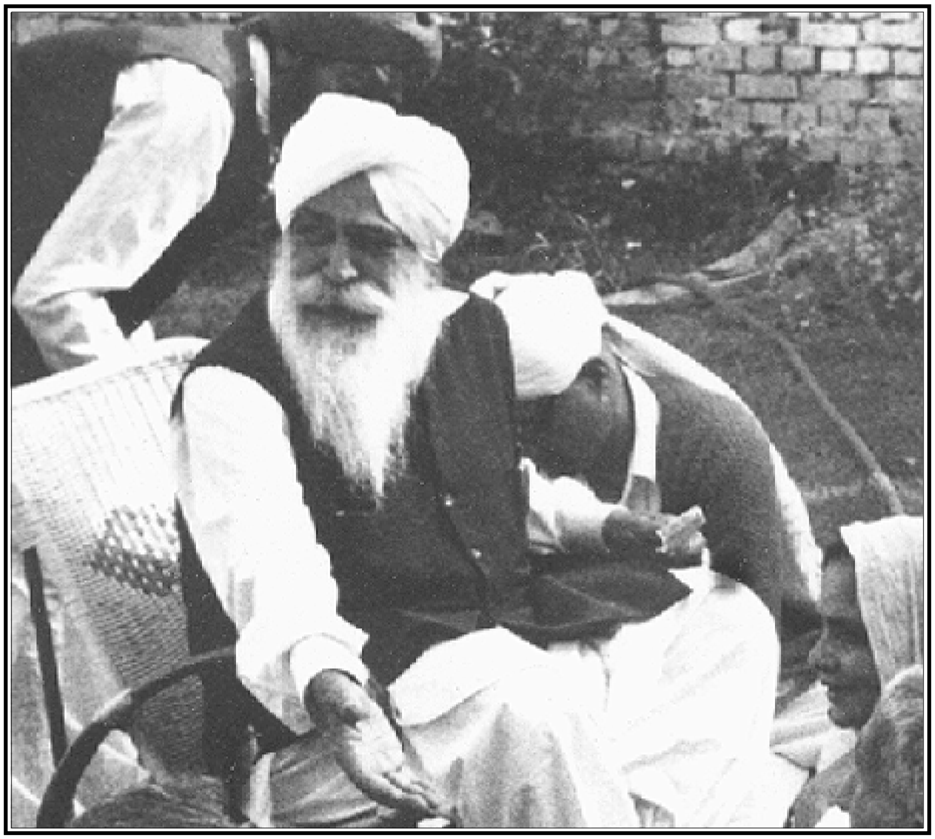

हमें अपने प्यारे सतगुरु के संदेश का प्रसार करना चाहिए। हमें एक–दूसरे के साथ प्यार करना चाहिए। जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हमें यह कहने की जरूरत नहीं कि मैं एक गुरु हूँ, मैं एक सन्त हूँ या मुझे यह अनुभव हुआ है। कबीर साहब कहते हैं:

भक्ति करे पाताल में प्रकट होऐ आकाश।

जो परमात्मा से मिल चुके हैं वे कभी नहीं कहते कि वे परमात्मा से मिल चुके हैं। जो परमात्मा से कभी नहीं मिले वे सदा कहते हैं कि वे परमात्मा को मिल चुके हैं और परमात्मा के बारे में जानते हैं।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

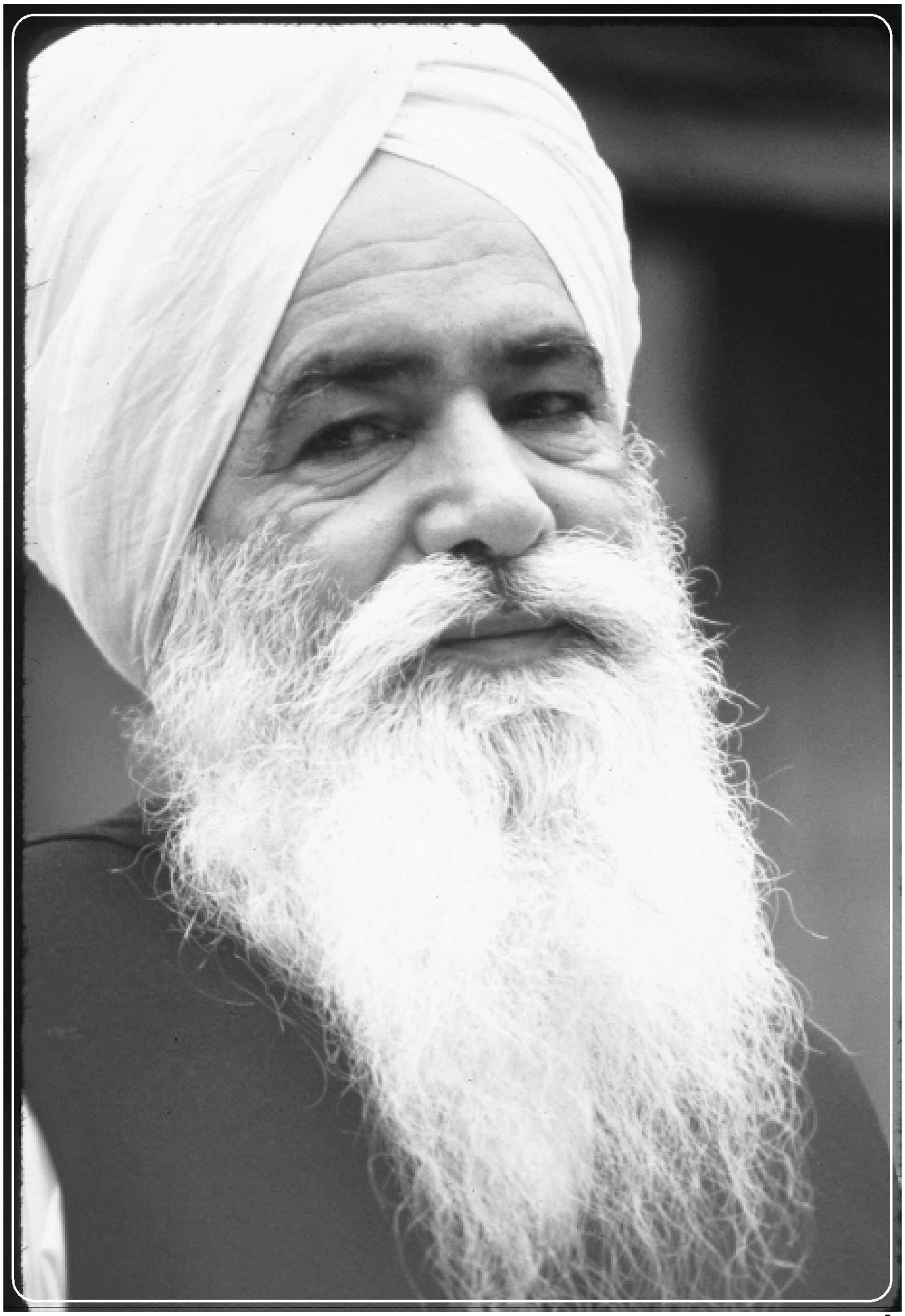

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग -परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

विछोड़े की आग

बुल्लेशाह की बानी

न्यू हैम्पशायर अमेरिका

मैं उडीका कर रही, कदे आ कर फेरा।
मैं जो तैनूं आखिया, कोई घल्ल सनेहड़ा।।

लैला–मजनूं एक–दूसरे के साथ प्यार करते थे। लैला एक शहजादी थी, लैला का पिता एक बादशाह था। बादशाह ने शहर में मुनादी करवा दी कि मजनूं जिस दुकान पर आए उससे बिना कुछ लिए जो सामान वह माँगे उसे दे दिया जाए, बादशाह उसका भुगतान करेगा।

जब मुनादी हुई तो लाखों मजनूं उस शहर में आ गए और वे अपने आपको मजनूं बताकर दुकानों से चीजें माँगने लगे। असल में एक ही मजनूं था जो लैला से प्यार करता था; वह अपने प्यार के नाम पर कोई भी चीज माँगने नहीं आया। जब शहर में इतने सारे मजनूं आ गए तो दुकानदार हैरान होकर बादशाह के पास आए और उन्होंने बादशाह से पूछा, ''मजनूं एक है या अनेक हैं?'' बादशाह ने कहा, ''मैं कल तुम्हें बताऊँगा कि कितने मजनूं हैं?'' बादशाह ने लैला से पूछा, ''कितने मजनूं हैं?'' लैला ने कहा, ''केवल एक ही मजनूं है।'' मैं कल ऐसा करूंगी कि झूठे मजनूं भाग जाएंगे, असली मजनूं ही रह जाएगा।

लैला ने शहर की सभी दुकानों पर एक चाकू और एक प्याला रखवा दिया और कहलवा दिया लैला को मजनूं के दिल के माँस का टुकड़ा चाहिए। जो लोग अपने आपको मजनूं कहते थे, वे सब भाग गए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब असली मजनूं को पता चला कि उसके नाम पर बहुत से झूठे मजनूं पैदा हो गए हैं और वे दुकानदारों को धोखा दे रहे हैं तब असली मजनूं आया और अपने दिल के माँस का टुकड़ा देने को तैयार हो गया। मजनूं ने कहा, ''मुझे पहले पता चल जाता तो दिल का एक टुकड़ा तो क्या! मैं अपने सारे शरीर का माँस देने के लिए तैयार हूँ।''

इस तरह हम सतगुरु के दरबार में दिखावे के मजनूं बनते हैं। दूध और हलवा मांडा उड़ाते हैं लेकिन असली मजनूं वही है जो अपने शरीर को तकलीफ देता है।

एक बार गुरु गोविंद सिंह जी सतसंग दे रहे थे उस समय पाँच हजार प्रेमी मौजूद थे। आप उनमें से असली शिष्यों की परीक्षा करना चाहते थे। आपने एक तरफ टैन्ट लगवाया। आप टैन्ट के बाहर तलवार लेकर आए और कहने लगे, ''मुझे कुरबानी के लिए एक आदमी की जरूरत है।'' सभी प्रेमी सोच रहे थे कि गुरु तो शिष्यों की देखभाल किया करते हैं लेकिन यह गुरु तो बदल गया है। क्या गुरु गोविंद सिंह पागल हो गए हैं? उनके असली भेद को कोई नहीं समझ सका।

इतने सारे शिष्यों में से सिर्फ एक आदमी उठा जिसने कहा कि मेरा सिर कुर्बानी के लिए तैयार है। गुरु गोविंद सिंह जी उसे टैन्ट में ले गए। उस टैंट में पाँच बकरियाँ थीं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने एक बकरी का सिर काट दिया व खून से भरी तलवार लेकर बाहर आए और कहा, ''मुझे एक और सिर की जरूरत है।'' अब प्रेमियों को पूरी तरह विश्वास हो गया कि आप शिष्यों का कत्ल कर रहे हैं।

एक और शिष्य जो पूरी तरह से गुरु पर समर्पित था उसने खड़े होकर कहा, ''मैं अपना सिर देने के लिए तैयार हूँ।'' गुरु गोविंद सिंह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जी उसे भी टैंट में ले गए, एक और बकरी का कत्ल कर दिया इस तरह पाँच हजार प्रेमियों में से गुरु को सिर्फ पाँच शिष्य ही मिले। गुरु गोविंद सिंह जी ने उन पाँचों शिष्यों को पूर्ण तवज्जो दी और पूर्ण शिष्य बना दिया फिर उन पाँचों शिष्यों को जिन्दा बाहर ले आए।

जब बाकी प्रेमियों को पता चला कि यह तो केवल इम्तिहान था; वे इस इम्तिहान में फेल हो गए हैं। वे अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए बहाने बनाने लगे अगर हमें पहले पता होता तो हम सभी गुरु गोविंद सिंह जी की बात मान लेते।

इसी तरह गुरु नानकदेव जी ने अपने शिष्यों का इम्तिहान लिया कि कितने शिष्य अंदर के भेद को जानते हैं। उन्होंने एक मुर्दे की तरफ इशारा करके कहा कि कौन इसे खाने के लिए तैयार है! मुर्दे को छूना भी अपवित्र माना जाता है? उसे कैसे खाया जा सकता है? जब गुरु नानकदेव जी ने भाई लैहणा से कहा तो उसने कहा, ''ठीक है मैं इसे खाऊँगा।'' भाई लैहणा मुर्दे के चारों तरफ चक्कर लगाने लगा।

गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''भाई लैहणा! तुम क्या कर रहे हो?'' उसने उत्तर दिया मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं इस मुर्दे को किस तरफ से खाना शुरू करूँ? इस तरह भाई लैहणा (अंगददेव) पास हुए और गुरु नानकदेव जी के उत्तराधिकारी बने। जब गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ा तो गुरु अंगददेव जी ने असहाय वियोग में कहा :

जिस प्यारे सिउ नेह, तिस आगै मर चलीऐ।
धृग जीवन संसार ताके पाछै जीवणा।

जब हजरत बाहु के गुरु ने चोला छोड़ा तो आपने होका भरकर रोते हुए यही कहा:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इह दुख हमेशा रहसी बाहू, मैं रोंदड़ी ही मर जावां हू।

जब बाबा सावन सिंह जी ने चोला छोड़ा तब महाराज कृपाल सिंह जी ने डेरा ब्यास में अपना मकान छोड़ दिया और आप ऋषिकेश के जंगलों में अपना जीवन बिताने के लिए चले गए। जो सेवक भजन–अभ्यास करता है वह अपने गुरु की जायदाद की तरफ नहीं देखता वह तो अपने गुरु के **विछोड़े की आग** में तड़फ रहा होता है।

जब बाबा सावन सिंह जी ने चोला छोड़ा उस समय हमारी पलटन ब्यास के पास थी। मैंने अपनी आँखों से देखा है वहाँ लगभग दो सौ लोग थे। जिनमें से कुछ लोगों ने दीवारों से कूदकर और कुछ लोगों ने नदी में कूदकर अपनी जान दे दी क्योंकि वे अपने सतगुरु का विछोड़ा सहन नहीं कर सके।

जब हुजूर कृपाल ने चोला छोड़ा तो उस समय जो प्रेमी पश्चिम से आए वे भी मेरी हालत को जानते हैं। मेरे अंदर भी यही विचार आए कि हे कृपाल! मैं आपका इंतजार कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप एक दिन मेरे घर जरूर आएंगे। मैं आपको सन्देश भेज रहा हूँ। आप कम से कम मुझे यह सन्देश भेजें कि आप कहाँ हैं? इसी तरह बुल्लेशाह अपनी बानी में अपने गुरु के आगे वियोग व प्रेम में विनती कर रहे हैं।

चशमां सेज बिछाइयां, दिल कीता ए वेहड़ा।
तूं लटकेंदा आ वड़ी, शाह इनायत मेरा।।

मैंने हुजूर कृपाल से एक ही विनती की थी आप जैसे पहले मेरे आश्रम में आया करते थे, उसी तरह मेरे आश्रम में अब भी आओ। मैंने अपने जीवन की सड़क बना दी है ताकि आप उस पर चल सकें। मैंने

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अपने हृदय को आंगन बना दिया है जहाँ आकर आप रह सकें। आप ही मेरे परमात्मा, गुरु व सब कुछ हैं।

ओह अजेहा कौण है, गल्ल जा आखे जेहड़ा।
मैं विच किया तकसीर है, मैं वरदा तेरा।।

अब हम सन्त कृपाल जैसा कहाँ से पा सकते हैं जो हमें प्यार और भरोसा दे सके। जब मुझे पता चला कि महाराज कृपाल ने चोला छोड़ दिया है, उस समय एक पुलिस इंसपेक्टर मेरे पास बैठा हुआ था। उस समय मुझे कुछ समझ नहीं आया और मेरे मुँह से यही निकला, ''मैंने क्या गुनाह किया था जो आप मुझे छोड़कर चले गए हैं? मैंने आपसे कभी कोई सांसारिक चीज नहीं माँगी, मैं आपका दास था।

तैं बाझो मेरा कोण है, दिल ढा ना मेरा।

मेरे अंदर से यही हूक उठी, तुम्हारे बिना इस संसार में मेरा कौन है? मेरा दिल न तोड़ें फिर इस संसार में आ जाएं। आपने इस गरीब को राजस्थान का बादशाह कहा, इस गरीब के साथ खाना खाया और यह कहा कि तुम्हारी देखभाल करना मेरा काम है।

जब राजस्थान से कोई भी सतसंगी आपसे मिलने दिल्ली जाता तो आप उससे पूछते, ''क्या तुम उससे मिलकर आए हो?'' महाराज कृपाल को मेरी अंदर से चिन्ता थी और वह बाहरी तौर से भी मेरे लिए फिक्र करते थे। महाराज जी के चोला छोड़ने के बाद मेरे लिए सारा संसार खाली हो गया कि अब संसार में कौन मेरा सुख–दु:ख पूछेगा?

भारत में यह रिवाज़ है कि जब किसी लड़की की शादी होती है तो उसे अच्छे–अच्छे कपड़े, गहने दिए जाते हैं। मैंने हुजूर से कहा मेरी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हालत उस दुल्हन जैसी है जिसने 'शब्द–नाम' के गहने पहन रखे हैं। अभी मेरी इच्छा पूर्ण नहीं हुई और आपने मुझे बीच में ही छोड़ दिया।

दसत कंगन बाहीं चूड़िया, गल नौ रंग चोला।
माही मैनूं कर गया, कोई रावल रोला।।

कई बार अंदर से हूक उठती। मेरा पति मुझे छोड़ गया है और मेरे सारे गहने नष्ट हो गए हैं जब किसी स्त्री का पति शरीर छोड़ जाता है तो पत्नी गहनें और कपड़ों को लेकर किस तरह रोती है! मेरी हालत उस पत्नी जैसी है जिसका पति मर गया है।

जल बल आहीं मारिआं, दिल पत्थर तेरा।

उस समय बहुत से लोग मुझसे तर्क कर रहे थे कि आप कहा करते हैं अगर कोई देह त्याग देता है तो रोना नहीं चाहिए। आप इतना क्यों रो रहे हैं? मैंने उन लोगों से कहा, ''मैं जानता हूँ कि मेरे सतगुरु ने मुझे नहीं छोड़ा, आपने शारीरिक तौर से मेरे और अपने बीच पर्दा डाल दिया है। अब मैं बाहरी ज़ुबान से आपसे बात नहीं कर सकता। आपका हृदय पत्थर का बन गया है इसी कारण मैं आपको नहीं देख सकता।''

किया तेरी मांग सिन्धूर भरी, सोहे रतड़ा चोला।
वांग सस्सी मैं कूकदी, कर ढोला-ढोला।।

दिल से केवल यही आवाज आ रही थी, क्या आपने मुझसे शादी नहीं की? क्या मैं आपकी पत्नी नहीं हूँ? अब आपने मुझे विधवा बनाकर छोड़ दिया है। जैसे सस्सी पुन्नू का नाम पुकार–पुकार कर इन्तज़ार कर रही थी। मैं भी रो रही हूँ और कृपाल–कृपाल पुकार रही हूँ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सस्सी एक शहजादी थी। ज्योतिषियों ने बादशाह को बताया कि यह लड़की एक महान प्रेमिका बनेगी; यह तुम्हारे नाम पर दाग लगाएगी। यह जिससे प्यार करेगी उसे तुम पसन्द नहीं करोगे। बादशाह अपने नाम पर दाग नहीं लगवाना चाहता था इसलिए उसने ज्योतिषी के कहने पर सस्सी को कुछ धन और एक लॉकेट जिसमें सस्सी की तस्वीर थी एक बक्से में डालकर नदी में फिंकवा दिया।

ज्योतिषी ने सोचा कि वह बक्से में से धन निकाल लेगा लेकिन वह बक्सा उसे नहीं मिला; वह बक्सा एक धोबी को मिला। धोबी ने उस धन से लड़की का पालन–पोषण किया। कई सालों के बाद सस्सी का पिता उस जगह आया। उसने उस लड़की को देखा और उससे प्रेम करने लगा। बादशाह ने धोबी से कहा कि वह लड़की से शादी करना चाहता है। धोबी ने कहा कि हम सस्सी से पूछकर बताएंगे।

धोबी ने सस्सी से पूछा, ''बेटी! यह बादशाह तुमसे शादी करना चाहता है।'' सस्सी ने धोबी को उत्तर दिया, ''पिता जी! आप जो कहेंगे मैं करुंगी, आप जहाँ भेजेंगे मैं जाऊँगी।'' इस तरह सस्सी महलों में आ गई। बादशाह ने उस तस्वीर वाले लॉकेट से उसे पहचान लिया कि यह तो उसकी बेटी है जिसे उसने नदी में फिंकवा दिया था। बादशाह को महसूस हुआ कि वह बहुत बड़ी गलती करने जा रहा था। बादशाह ने प्रायश्चित करने के लिए सस्सी को एक बहुत बड़ा बाग दे दिया और उसके साथ बेटी की तरह प्रेम करने लगा।

एक बार सस्सी ने किसी फोटोग्राफर की दुकान पर पुन्नू की तस्वीर देखी। सस्सी ने फोटोग्राफर से कहा कि भाई! तू यह फोटो मुझे दे दे। फोटोग्राफर ने फोटो देने से इंकार कर दिया क्योंकि ऐसी सुंदर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

फोटो लगाकर फोटोग्राफर अपनी दुकान सजाते हैं। पुन्नू 'किसम' शहर का रहने वाला था, वह बहुत सुन्दर था। सस्सी पुन्नू की तस्वीर देखकर उससे प्रेम करने लगी। सस्सी पुन्नू से बाहरी तौर से नहीं मिली थी लेकिन सदा पुन्नू के ही सपने देखती रहती थी।

सस्सी ने पुन्नू का बारह साल इन्तज़ार किया। वह यह भी नहीं जानती थी कि पुन्नू कौन है और कहाँ रहता है? वह बारह साल तक नहीं सोई, सदा पुन्नू के आने का इन्तज़ार करती रही क्योंकि दिल को दिल से राह होती है। पुन्नू को भी सस्सी के सपने आने लगे वह भी सस्सी से प्रेम करने लगा। दोनों के दिलों में प्यार की आग जलने लगी।

आखिर बारह साल के इंतजार के बाद पुन्नू सस्सी के बाग में आया तो किसी ने सस्सी को पुन्नू के बारे में बताया। सस्सी बारह साल से सोई नहीं थी। जब उसे अपने प्यारे की गोद मिली तो वह गहरी नींद में सो गई उसे कुछ भी याद नहीं रहा कि क्या हो रहा था, वह देर तक सोई रही।

जब पुन्नू के माता–पिता को पता चला कि वह एक लड़की के प्रेम में पागल हो गया है इसलिए उन्होंने अपने आदमियों को पुन्नू को वापिस लाने के लिए भेजा। जब वे आदमी वहाँ पहुँचे तो दोनों प्रेमी गहरे प्रेम में सो रहे थे। जब पुन्नू जागा तो उन आदमियों ने पुन्नू को शराब पिलाई और शराब के नशे में पुन्नू को ऊँट पर लादकर वापस ले गए।

सुबह सस्सी जागी तो उसे पुन्नू नहीं मिला। वह पागलों की तरह रोने लगी और अपने बाल खींचने लगी। उसके माता–पिता और सभी लोगों ने उसे समझाया लेकिन उसने कहा, ''मुझे समझाने की कोशिश न करें मैं अपने प्रेमी से विछुड़ गई हूँ।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सस्सी ने पुन्नू की खोज रेगिस्तान में ऊँट के पैरों के निशान से शुरू की। रेत जल रही थी और जलते हुए रेत में वह ऊटों के पैरों के निशानों का पीछा करते हुए चल पड़ी। वह बहुत प्यासी थी लेकिन वह पुन्नू–पुन्नू पुकारती रही। उसने देखा कि वहाँ पास में ही एक मरूद्यान था और वहाँ एक चरवाहा भी था लेकिन उसे डर था कि यदि वह पैरों के निशान छोड़कर पानी पीने गई तो पैरों के निशान हवा में उड़ जाएंगे और वह रास्ता नहीं ढूंढ सकेगी।

सस्सी ने पैरों के निशानों से कहा तुम्हें डर है कि तूफान आएगा तो तुम मिट जाओगे और मुझे डर है यदि तुम नहीं रहोगे तो मैं अपनी खोज पूरी नहीं कर पाऊंगी। तुम मुझे वचन दो अगर तुम मिट जाओगे तो बहुत बड़ा अपराध करोगे और तुम्हें परमात्मा के दरबार में इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

जो रास्ता मेरे प्यारे के पास जाता है अगर मैं इस रास्ते से भटक गई तो मुझे इसकी कीमत परमात्मा के दरबार में चुकानी पड़ेगी क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि मेरा प्यार झूठा था। सस्सी चरवाहे के पास पानी मांगने गई। चरवाहा उसे देखकर डर गया क्योंकि उसे वह औरत नहीं भूतनी लग रही थी। चरवाहे ने उसे पीने के लिए पानी नहीं दिया।

जब सस्सी वापस लौटी तो उसे पैरों के निशान नहीं मिले क्योंकि वह निशान हवा से उड़ गए थे। वह घबरा गई कि उसने रास्ता खो दिया है वह अब कहाँ जाए? सस्सी ने पुन्नू–पुन्नू पुकारते हुए अपने प्रेमी के वियोग में शरीर त्याग दिया। चरवाहे ने सस्सी को मरा हुआ देखा तो उसे पता चला कि यह भूतनी नहीं थी, कोई औरत थी; उसने उसे वहाँ दफना दिया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब पुन्नू का नशा उतरा तो उसे पता चला कि उसने अपनी प्रेमिका को खो दिया है। वह उसी ऊँट पर सवार होकर सस्सी से मिलने चल पड़ा। रास्ते में वह उसी मरूद्यान के पास आया। उसने वहाँ एक नई कब्र देखी। पुन्नू ने उस कब्र को देखकर चरवाहे से पूछा, यहाँ कौन मर गया है, यह किसकी कब्र है? चरवाहे ने उत्तर दिया, मैं नहीं जानता कि यह औरत कौन थी? लेकिन यह पुन्नू–पुन्नू पुकार रही थी। पागलों की तरह रोते–रोते इसने अपना शरीर छोड़ दिया।

पुन्नू ने देखा उसकी प्रियतमा ने उसके लिए अपना शरीर त्याग दिया है। उसका प्यार सच्चा था वह भी वियोग के दर्द में था। कब्र फट गई; धरती ने उसे रास्ता दे दिया वह अपनी प्रियतमा से मिल गया।

इसी तरह मैं भी अपने पुन्नू कृपाल के लिए सदा रोया करता था। जब मेरी उम्र छः साल की थी मैं तभी से उसकी याद में था; मैंने पैंतीस साल आपकी तलाश की जिस तरह सस्सी की तड़फ बुझाने के लिए पुन्नू स्वयं चलकर आया था उसी तरह परमात्मा कृपाल भी मेरे पास चलकर आए लेकिन जब आपने चोला छोड़ा और मुझे संसार में अकेला छोड़ दिया तब धरती नहीं फटी और धरती ने मुझे अपने में समाने के लिए रास्ता नहीं दिया।

महाराज जी के सभी सतसंगियों को गुरु के साथ ऐसा प्यार करना चाहिए जैसा कि सस्सी ने पुन्नू के साथ किया। गुरु के प्यार के बिना हम तरक्की नहीं कर सकते। सस्सी–पुन्नू व लैला–मजनूं ये ऐसे प्रेमी थे जिनके प्यार में विषय–विकार नहीं था। उनका प्यार पवित्र था। उनका प्यार सांसारिक लोगों की तरह नहीं था। इसीलिए सन्त–महात्मा अक्सर सस्सी–पुन्नू व लैला–मजनूं का उदाहरण देते हैं। गुरूमत

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सिद्धान्त में सच्चे प्रेम को दर्शाने के लिए लैला और मजनूं की कहानियों का प्रयोग किया गया है।

अन गिणवें सूल हुण पै गए, सूलां दा घेरा।।

जब गुरु चोला छोड़ देता है तो सेवक के सामने अनेक समस्याएं पैदा हो जाती हैं, वह सो नहीं सकता। चाहे वह आरामदायक बिस्तर पर सो रहा होता है लेकिन वह अपने आपको पत्थर पर सोया हुआ महसूस करता है। जिस सेवक ने यह जान लिया कि उसका गुरु कुल मालिक है, वह इस संसार का राज्य और दुनियावी धन–दौलत स्वीकार नहीं करेगा। सच्चा शिष्य जानता है कि सतगुरु सर्वशक्तिमान है।

जब हुजूर कृपाल खूनीचक आश्रम आए तो मैंने आपको अपनी सारी जायदाद व जमीन देने की पेशकश की। आपने मुझसे कहा, ''मैं यहाँ इस ज़मीन–जायदाद के लिए नहीं सिर्फ तुम्हारे लिए आया हूँ।'' वह जायदाद आज सूनी पड़ी है; वहाँ कोई नहीं जाता। मैं अब एक छोटी सी कुटिया में रहता हूँ। जो लोग वहाँ जाते हैं वे जानते हैं कि मैं कैसी जगह में रह रहा हूँ। मैंने जो दूसरी जायदाद छोड़ी वह तीन मंजिल इमारत थी। जब हुजूर ने चोला छोड़ा तो मैंने इसे गिराना शुरू किया तब लोगों ने कहा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मैं जाता दुःख है मैनूं, दुःख घर घर साइयां।
सिर सिर भाबड भड़ किआ, सब पिट दिया गइयां।।

मैं जब अपने सतगुरु के वियोग में रो रहा था तब मैंने सोचा कि मैं अकेला ही इस वियोग में रो रहा हूँ। मेरे सतगुरु ने मुझे बताया था कि जब उनके गुरु ने चोला छोड़ा तो उन्होंने डेरे में अपना घर भी छोड़

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दिया था और वे किस तरह से रोते रहे। जब किसी का सतगुरु देह छोड़ देता है तो उसकी यही हालत होती है। बुल्लेशाह कहते हैं:

मैं सोचया दुःख मुझको, दुःख सवाया जग।
कोठे चड़ देखया, घर-घर ऐहो अग।

आप कहते है, ''मैंने सोचा! यह दर्द मुझे ही है लेकिन जब मैंने देखा तो हर घर इसी वियोग की आग में जल रहा है।''

जद आपणे सिर आ बणी, चुक गिआ सब झेड़ा।।

महाराज सावन सिंह के चोला छोड़ने के बाद हुजूर कृपाल की गुरु वियोग में जो दशा हुई उसे बताने में आपको दो घंटे लगे। आप जब मुझे यह बता रहे थे तब मैंने इसे मामूली बात समझा लेकिन वही सब कुछ जब मेरे साथ बीता, मुझे **विछोड़े की आग** का दुःख झेलना पड़ा तब मुझे अहसास हुआ कि जब सतगुरु चोला छोड़ देता है तो वियोग का दर्द सहन करना कितना कठिन हो जाता है।

उस दिन मैंने सोचा कि मुझे महाराज जी के साथ कार में नहीं जाना चाहिए ताकि आप कार की पिछली सीट पर आराम कर सके क्योंकि उस दिन आपने सतसंग के अलावा कई लोगों को समय दिया था। आपने मुझसे कहा, ''तुम मेरे साथ कार में बैठो मैं तुमसे बहुत जरूरी बातें करना चाहता हूँ।'' आपने चोला छोड़ा तो मुझे वही अनुभव हो रहा था जैसा आपने बताया था। आप मुझे बताना चाहते थे कि ऐसा समय तुम पर भी आएगा और तुम्हें भी यह दर्द सहन करना पड़ेगा।

जिहड़ीआं सौहरे मत्तीआं,दुःख घर घर सईआं।
सिर सिर भांबड़ भड़किआ,सब पिटदिआं गईआं।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जो यहाँ सतगुरु से सच्चा प्यार करते हैं वही ऊपरी मंडलों में सतगुरु से सच्चा प्यार कर सकेंगे। जिन पर सतगुरु प्रसन्न है वही सतलोक के देश में दाखिल हो सकेंगे, वही आत्माएं खुश हो सकती हैं।

जिस घर कंत ना बोलिआ, सोई खाली डेरा।

जिसकी आत्मा से सतगुरु बात न करे, जिसमें सतगुरु प्रकट न हो वह शरीर खाली है क्योंकि आत्मा का स्वामी वहाँ नहीं है।

ढूंढ शहर सब भालिआ, कासद घल्ला किहड़ा।
चडीआं डोली प्रेम दी, दिल धड़के मेरा।।

अब अंदर से आवाज़ आ रही है, मैंने आपको सारे शहरों में ढूंढा। आपको किस पते पर खत भेजूं! आपने मुझे अपना पता भी नहीं बताया।

कई प्रेमियों ने मेरे पास आकर कहा कि आपसे प्रेम करने व सोचने में कठिनाई होती है लेकिन मैंने उनसे कहा, ''मुझे आपसे प्यार करने व आपके बारे में सोचने में कोई कठिनाई नहीं होती है। वह कृपाल आप सबमें, सब पशुओं, पेड़ों, पक्षियों और संसार की हर वस्तु में है। मैं अपने प्यारे कृपाल को हर जगह देख रहा हूँ इसलिए मुझे आपसे प्यार करने में कोई कठिनाई नहीं है।''

महाराज सावन सिंह जी के समय आपका एक वज़ीरा नामक सेवक था। वह हर किसी को देखकर कहता, ''इसमें भी सावन शाह है।'' जब आत्मा प्रेम की डोली पर सवार होती है तो इसे बहुत दर्द महसूस होता है। इस प्रेम की डोली पर वही चढ़ते है जो इस दर्द को सहते हैं। जो यह कहते हैं कि अभ्यास में बैठने से उनकी टांगों या घुटनों में दर्द होता है ऐसे लोग प्रेम की डोली पर नहीं चढ़ सकते।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ऐ मुहम्मद कादरी, हत्थ पकड़ी मेरा।।

हुजूर कृपाल के सामने यह विनती है, ''हे सर्वशक्तिमान कृपाल! आप सारे संसार के मालिक हैं, आप हमारा हाथ मत छोड़ना, सदा हमारी रक्षा करना।''

पहली पौड़ी प्रेम दी, पुलसराते डेरा।

मैं आपको रोज बताता हूँ कि शुरु–शरु में सन्तमत के अभ्यास बहुत कठिन होते हैं। ये आग की नदी को पार करने जैसे लगते हैं लेकिन प्रेमी के लिए कोई कठिनाई नहीं होती, कोई दर्द नहीं होता और न ही कोई समस्या होती है।

हाजी मक्के दा हज करन, मैं मुख वेखां तेरा।।
आ इनायत कादरी, दिल खिचिओ मेरा।।

लोग कहते हैं कि सिमरन करने में, ध्यान टिकाने में कठिनाई होती है लेकिन पूर्ण प्रेमी के लिए कोई कठिनाई नहीं होती है। वह कहता है कि मुझे सिमरन करने की जरूरत नहीं है। मैं आपका सुन्दर मुख देख रहा हूँ। आपके सुंदर मुख का दर्शन ही मेरा भजन–अभ्यास है। 'नाम' केवल सतगुरु ने देखा और प्रकट किया होता है।

बलूचिस्तानी मस्ताना ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''मेरे लिए अकाल गुरु, वाहेगुरु, राधास्वामी सभी मर गए हैं केवल आप ही मेरी ज़िन्दगी हैं।'' सावन सिंह जी ने कहा, ''मस्ताना इस तरह की बातें मत करो।'' मस्ताना जी ने कहा, ''मैने आपके दर्शन कर लिए हैं मेरे लिए केवल आप ही हैं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ओह अजिही मैं नहीं, विच परदा तेरा।
खूंडीघत प्रेम दी, दिल खिचिओ मेरा ।।
देख अहवाल अबलीसदा, लऊं गोते मेरा।।

महाराज कृपाल के रूप में अकाल पुरूष आया। उसने मेरे बचपन की तड़फ को बुझाया। जितना प्यार सतगुरु ने मुझे दिया मैं उतना प्यार सतगुरु से नहीं कर सका, मेरे अंदर अहंकार का पर्दा था।

जब हुजूर पहली बार मेरे आश्रम आए उस समय आपका थोड़ी देर ही रूकने का कार्यक्रम था क्योंकि आपने आगे जाना था लेकिन आप पाँच–छः घन्टे रूके। जब सतगुरु ने कहा कि उन्हें जाना पड़ेगा तो मैनें आपसे कहा, ''आपने अपने प्यार की कुंडी डालकर मुझे खींच लिया है अब आपको कहाँ जाना है?

मैंने सतगुरु से कहा यहाँ हजारों लोग आपका इंतजार कर रहे हैं इनमें से कोई भी नामलेवा नहीं है। हजूर ने उन प्यासी आत्माओं को देखा। आपने उन आत्माओं पर बहुत दया बरताई। हर किसी ने हुजूर की जगह प्रकाश को देखा। हर किसी को ऐसा महसूस हुआ कि सतगुरु केवल उससे ही बात कर रहे हैं। इस तरह महान सतगुरु कृपाल ने सब पर दया की वर्षा की।''

पहली रात ही साल दी, दिल खौफ है मेरा।
डूंघी गोर खटें दियाँ, होइआ लहदों तेरा।।
पहिला बन्द खोल्हँदिआं, मुंह काबे मेरा।।

शुरू में जब हम भजन–अभ्यास करते हैं तो हमारा शरीर सुन्न होने लगता है तो हम महसूस करते हैं कि हम मर जाएंगे। हम एक रात

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को एक साल जैसा महसूस करते हैं लेकिन बाद में जब हमारी सुरत अंदर जुड़ जाती है तो हमें भजन–अभ्यास में आनन्द आने लगता है। हम रात से प्रार्थना करते है कि हे रात! तुम लम्बी हो जाओ क्योंकि जब दिन निकल आएगा तो मेरा अपने प्यारे सतगुरु से विछोड़ा हो जाएगा। जब शिष्य गुरु के कहे अनुसार भजन–अभ्यास करता है और गुरु की आज्ञा का पालन करता है तो वह पहली मंजिल पर पहुँच जाता है; उसका मुख गुरु की तरफ हो जाता है।

मिली बांग रसूल दी, फुल खिड़िया है मेरा।
सद्‌दा होइआ हाजरी, मैं हां हाजर तेरा।।
हर पल तेरी हाजरी, इहो सजदा मेरा।।

शुरु में हम 'शब्द' को सुनते है लेकिन 'शब्द' हमें ऊपर नहीं खींचता। जब हम मन को शान्त करके अपने ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं तब हम कृपाल का शब्द सुनते हैं तो हमारा हृदय फूल की तरह खिल जाता है हमें यह भी ख्याल नहीं रहता कि हमें कौन पुकार रहा है? सतगुरु ही हमें ऊपर खींच रहा है।

हमें समझाने के लिए घन्टी या शंख की आवाज होती है फिर बड़े घन्टे की आवाज सुनाई देती है। सन्त कहते है कि परमात्मा आपके अंदर है लेकिन जब हम अंदर जाते हैं तो वहाँ अपने सतगुरु को ही देखते हैं तब हमें अनुभव होता है कि सतगुरु ही परमात्मा है।

जब कबीर साहब इन्द्रमती को अंदर ले गए तब उसने देखा कि सतगुरु और कबीर एक ही हैं। इन्द्रमती ने कहा, ''आपने पहले क्यों नहीं बताया कि आप ही सतपुरुष हैं।'' कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तुम्हें पहले बता देता तो तुम्हें विश्वास नहीं होता कि यह साधारण सा आदमी सच्चखण्ड का मालिक कैसे हो सकता है?''

जब सेवक अंदर जाता है, वहाँ कृपाल को सुनता है तो उसके बाद वह कृपाल से कहता है, ''हे सर्वशक्तिमान कृपाल! मैं सदा आपकी रज़ा में राजी हूँ। मैं सब जगह आपको देखता हूँ। आप इस दुनियां में मुझे जो काम करने के लिए कहेंगे मैं वह काम करूंगा। मैं सदा आपके दरबार में हाजिर हूँ और मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि मेरी सोते–जागते सदा आपके दरबार में हाजिरी लगती रहे।''

बुल्लाशौह दे वासते, सीने भड़कण मांही।
औखा पेंडा प्रेम दा, सोई घटदा नाहीं।।
राह विच वाहगी चितरी, सिर धाड़ी पैंडा।

अगर हम गलती से आग की चिंगारी पर पैर रख दें तो हमें कितना दर्द होता है! इसी तरह अजायब के दिल में कृपाल के **विछोड़े की आग** जल रही थी। जब हुजूर ने चोला छोड़ा उस समय लोग आपकी जायदाद के लिए चिन्तित थे। एक–दूसरे से पूछ रहे थे कि उत्तराधिकारी कौन बनेगा?

सच्चे प्रेमी गुरु की जायदाद पर निगाह नहीं रखते और न ही उत्तराधिकारी बनने की इच्छा रखते है। वे अपने गुरु के प्यार में रहते हैं। वे अपने सतगुरु से विछुड़कर होके लेते और रोते हैं। प्रेम का मार्ग बड़ा कठिन है यह घटता नहीं सदा बढ़ता है। प्रेमी पलक झपकते ही समुंद्र पार कर जाते हैं, हम छोटे से नाले को भी पार नहीं कर सकते।

प्रेमी लोग समुंद्र टपदे, साथो आड़ ना जांदी टप्पी।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

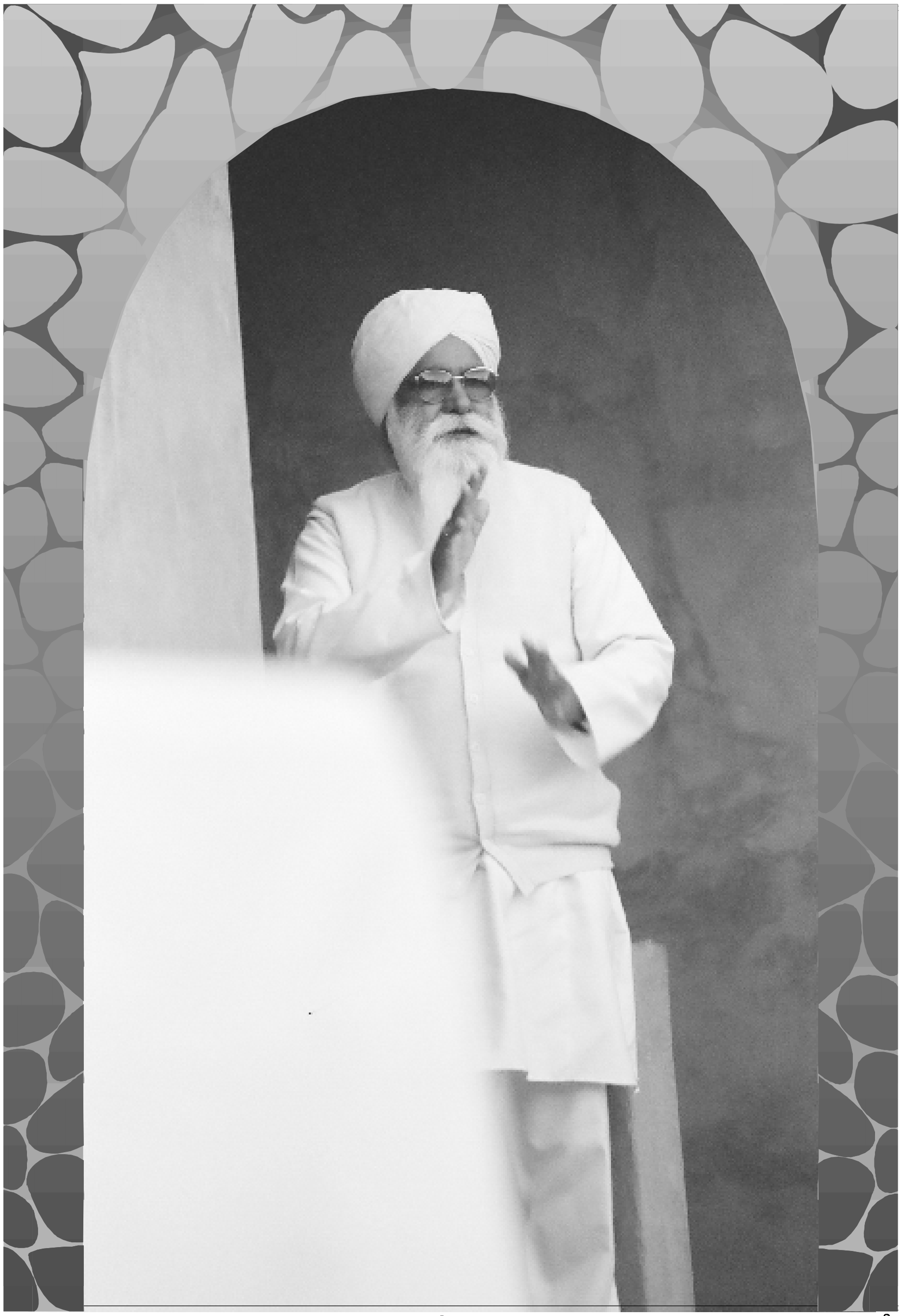

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग -परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम से नदी पार

वारां - भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

राजा भोज संस्कृत का बहुत बड़ा विद्वान था और विद्वान लोगों की बहुत कद्र करता था। जब कोई आदमी काम और लोभ में फँस जाता है तो उसके सारे गुण खत्म हो जाते है जैसे गंदगी पानी को खराब कर देती है वैसे ही काम, लोभ आदमी को खराब कर देते हैं।

राजा भोज के दरबार में कालीदास संस्कृत का विद्वान था। वह मंत्रियों में 'रत्न' कहलवाता था। एक बार राजा भोज की रानी भानुमति और कालीदास की पत्नी विद्यावंती एक दूसरे से मिली। वे आपस में अपने पतियों की बातें करने लगीं। कालीदास की पत्नी ने रानी से कहा, ''मेरे पति मुझसे बहुत प्यार करते हैं; मैं जो काम कहती हूँ मेरे पति वह काम करने में एक मिनट भी नहीं लगाते।'' रानी ने कहा, ''मेरे पति मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, मैं उन्हें जो कुछ करने के लिए कहती हूँ वे उसी समय कर देते हैं।'' इस तरह वे दोनों आपस में विवाद कर रही थी, अपने पतियों के प्यार के उदाहरण दे रही थी।

आखिर उन्होंने कहा, ''देखें! वे हमारा कितना ध्यान रखते हैं। वे हमें खुश करने के लिए किस सीमा तक जा सकते हैं?'' रानी ने कहा, ''मैं आज रात अपने पति का गधा बनाऊंगी और उस पर सवारी करूंगी।'' कालीदास की पत्नी ने कहा, ''मेरे पति की दाढ़ी बहुत सुंदर है, मैं अपने पति की दाढ़ी की हजामत करवा दूंगी।''

जब राजा राजकार्य समाप्त करके महल में आया तो उसने देखा कि उसके कमरे में अंधेरा है। रानी उदास होकर लेटी हुई थी। राजा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ने रानी से पूछा, ''तुम उदास क्यों हो?'' रानी ने कहा, ''आपने मेरे लिए सब कुछ किया है। आपने सदा मेरी अच्छी देखभाल की है लेकिन मैंने आपके राज्य में कोई गधा नहीं देखा।'' राजा भोज ने कहा, ''गधों की क्या बात है मैं कल तुम्हारे लिए बहुत से गधे मंगवा लूंगा।'' रानी ने कहा कि मैं अभी गधा देखना चाहती हूँ अगर कोई आज मर रहा हो और उसे दवाई कल दी जाएगी यह कैसे संभव है?

राजा ने कहा कि मैं अभी गधा बन जाता हूँ। राजा गधा बन गया और उसने गधे जैसी आवाज निकाली। इस तरह रानी बहुत खुश हुई। तब राजा भोज ने कहा, ''मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ तुम्हें खुश करने के लिए मैं गधा बन गया।'' रानी ने कहा कि संसार में आप अकेले ही आदमी नहीं हैं जो अपनी पत्नी को खुश रखता है। आपके दरबार का कालीदास भी अपनी पत्नी को खुश करने के लिए बहुत कुछ करता है कल आप दरबार में देखना उसकी दाढ़ी साफ होगी।

जब कालीदास घर गया उसकी पत्नी ने कहा, ''लोग कहते हैं कि आपकी दाढ़ी बहुत सुंदर है लेकिन मुझे आपकी दाढ़ी अच्छी नहीं लगती, आप अभी इसकी हजामत करवाओ।'' कालीदास ने कहा, ''कल मैं नाई को बुलाकर हजामत करवा लूंगा।'' कालीदास की पत्नी ने कहा, ''मैं नाई बनकर तुम्हारी हजामत बना देती हूँ।'' कालीदास ने कहा कि ठीक है जैसा तुम चाहो और उसने अपनी दाढ़ी कटवा ली। तब कालीदास ने कहा, ''देखा! मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ तुम्हारा कितना ध्यान रखता हूँ।'' कालीदास की पत्नी ने कहा कि सिर्फ आप ही ऐसे नहीं हैं जो अपनी पत्नी के लिए सब कुछ करते हैं; कल आप राजा भोज से पूछना कि उसने अपनी पत्नी को खुश करने के लिए पिछली रात क्या किया है?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगले दिन सुबह दरबार लगा तो कालीदास दरबार में आया। राजा भोज ने देखा कि कालीदास की दाढ़ी नहीं है। राजा को अंदाजा नहीं था कि पिछली रात जो घटा है कालीदास को उसके बारे में पता है? राजा ने कालीदास को देखकर हँसकर उस पर व्यंग्य किया, ''कालीदास! तुमने किस तीर्थ पर जाकर दाढ़ी साफ करवा ली है।'' कालीदास ने कहा, ''महाराज जी! जहाँ आप गधे बने थे।''

इस कहानी का यह मतलब है कि वे अपने काम में कुशल विद्वान थे लेकिन वे सब कुछ मन और बुद्धि के घाट पर किया करते थे; इसी कारण वे असफल हो गए। महाराज कृपाल ऐसे लोगों को दिमागी पहलवान कहा करते थे क्योंकि जो दिमागी पहलवान होते हैं वे असल जीवन में कुछ भी नहीं होते।

बाबा बिशनदास कहा करते थे, ''सन्तमत में कामयाब होने के लिए सबसे पहले विश्वास होना चाहिए। आप सतगुरु पर विश्वास करके उनसे प्यार करें। सन्तमत में कामयाब होना मुश्किल नहीं लेकिन सतगुरु पर विश्वास करना मुश्किल है।''

बाबा बिशनदास जी एक ग्वालिन की कहानी सुनाया करते थे। उसे दूध बेचने के लिए नदी पार करनी पड़ती थी। एक दिन जब वह नदी पार करने वाली थी तभी बरसात शुरू हो गई। नज़दीक ही एक मंदिर था। वह भीगने से बचने के लिए मंदिर के छज्जे के नीचे खड़ी हो गई। मंदिर के अंदर पंडित जी वेदों-शास्त्रों पर कथा कर रहे थे। किसी ने ग्वालिन से कहा कि अंदर बैठकर पंडित जी की कथा सुनो। वह अंदर गई वहाँ पंडित जी 'नाम' और जीवित सतगुरु की महिमा गा रहे थे; यह सब पंडित जी वेदों-शास्त्रों में से पढ़कर बोल रहे थे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वेद–शास्त्र जीवित सतगुरु की महिमा से भरे पड़े हैं। जीवित सतगुरु की तलाश बहुत जरूरी है क्योंकि गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती। ग्वालिन को सतसंग अच्छा लगा। उसके बाद जब भी मौका मिलता वह मंदिर में जाकर पंडित जी की कथा सुनती। कथा सुनने से उसे जीवित सतगुरु की तलाश करने की प्रेरणा मिली। उसे जीवित सतगुरु मिले और उसने 'नामदान' ले लिया। उसकी जमीन पहले से ही तैयार थी। उसे सतगुरु और परमात्मा में बहुत भरोसा था। वह शुरूआत में ही भजन–अभ्यास में कामयाब हो गई।

नदी पार करने के लिए ग्वालिन को दूर जाकर पुल के ऊपर से जाना पड़ता था। एक दिन ग्वालिन ने सोचा! 'नाम' जपने से आदमी आसानी से भवसागर तर जाता है तो क्या मैं नाम जपकर यह छोटी सी नदी पार नहीं कर सकती?'' उसका गुरु में दृढ़ विश्वास था, वह पूर्ण भजन अभ्यासी थी इसलिए उसने आसानी से पानी के ऊपर चलकर नदी को पार कर लिया। उसने नाम जपा और नाम ने उसकी रक्षा की। इसके बाद उसने कई बार नदी को पार किया।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि प्रेमी आत्मा का सतगुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुश्क बारूद को आग के पास करते ही विस्फोट हो जाता है।

उसी पंडित ने ग्वालिन को पुल के बिना नदी पार जाते हुए देखा। ग्वालिन ने पंडित से कहा, ''पंडित जी! आप भी मेरी तरह नदी पार क्यों नहीं करते? नाम बहुत शक्तिशाली है। नाम सदा मेरी रक्षा करता है। मैं गरीब ग्वालिन नाम का सहारा लेकर नदी पार जाती हूँ लेकिन आप नदी के किनारे खड़े हैं। आपने वेदों–शास्त्रों में से नाम की कथा की और विद्वान बन गए पर बिना अभ्यास के आप कौवे जैसे ही रहे।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महाराज सावन सिंह जी इस कहानी को दूसरे तरीके से समझाया करते थे, ''मन सदा हमारे अंदर रहता है। मन कभी हमें गुरु पर भरोसा करवा देता है कभी भरोसे को तोड़ देता है; यह संघर्ष चलता रहता है अगर हम मन के साथ संघर्ष जारी रखते हैं तो एक दिन सतगुरु में दृढ़ भरोसा रखने में कामयाब हो जाते हैं।

जब मन सतगुरु में भरोसा करवा देता है हमें उस समय का फायदा उठाना चाहिए, अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच लाकर अंदर जाना चाहिए। जब हम अंदर जाकर अपनी आंखों से देख लेते हैं तो हमारा मन कभी भरोसा नहीं तोड़ पाएगा। अगर हम अपनी आँखो से बैल देख लें तो चाहे! सारी दुनियां कहे कि यह बैल नहीं घोड़ा है तो हमें विश्वास नहीं होगा। जब आप 'शब्द–रूप' सतगुरु को अंदर और बाहर काम करता हुआ देख लें तो चाहे कितने ही लोग आपके विश्वास को डगमगाएं वे कभी आपके विश्वास को डगमगाने में सफल नहीं होंगे।''

महात्माओं की कहानियाँ बेकार नहीं होती ये हमारे लिए बहुत महत्त्व रखती हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''महात्माओं की कहानियों को वही सुनते हैं जो उनके मार्ग पर चलने वाले होते हैं।''

उजल केहाँ चिलकणा थांली जेवणि जूठी होवै।
जूठि सुआइ माँजीऐ गंगा जल अंदरि लै धोवै।
बाहरु सुचा धोतिआँ अंदरि कालख अंति विगोवै।
मनि जूठे तनि जूठि है थुकि पवै मुहि वजै रोवै।
साधसंगति गुर सबदु सुणि कपट सनेही गलां गोवै।
गली त्रिपति न होवई खंडु करि साउ न भोवै।
मखनु खाइ न नीरु विलोवै।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाई गुरदास जी शंख और कांसे का उदाहरण देते हैं कि जब कांसे के बर्तन में खाना परोसते हैं तो लोग उसे जूठा समझते हैं। खाना खाने के बाद उन बर्तनों को धोते हैं। कुछ लोग उन बर्तनों की जूठन दूर करने के लिए गंगाजल से भी धोते हैं; कुछ लोग जूठन दूर करने के लिए अग्नि में डालकर तपाते भी हैं। हम बाहर की जूठन को हटा लेते हैं लेकिन अंदर की जूठन नहीं हट सकती।

आप इस शरीर की तुलना उस कांसे के बर्तन से करते हैं कि हम बाहर से शरीर को कितना भी साफ कर लें चाहे! कितने ही तीर्थों पर स्नान कर लें तो बाहर की गंदगी ही दूर कर सकते हैं। हमारे शरीर के अंदर की गंदगी जैसे–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार तीर्थों के पवित्र पानी से कभी दूर नहीं हो सकती। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भरिए हथु पैर तनु देह, पाणि धोते उतरस खेह।
मूत पलीती कपड़ होवै, दे साबुण लईए ओहु धोइ।
भरीए मति पापां कै संगि, ओह धोपै नावै कै रंगि।

भाई गुरदास जी शंख के बारे में कहते हैं, ''शंख बाहर से सफेद और चमकदार होता है लेकिन अंदर से काला होता है। मंदिरों में जब लोग शंख को बजाते हैं तो इसमें थूक भर देते हैं इसे गंदा बना देते हैं; उस समय यह रोता है अफसोस करता है कि मैंने अपना असली घर महासागर क्यों छोड़ा? महासागर छोड़ने के कारण ही मेरी यह दुर्दशा हुई। लोग रोज मुझे बजाते हैं और मुझे जोर से चीखना पड़ता है।''

कबीर साहब कहते हैं, ''शंख दिन–रात चीखता है क्योंकि वह असली घर को छोड़कर मंदिरों में आ गया।'' मनमुख शंख की तरह होता है यह संगत में भी आता है लेकिन अपने हृदय में कुछ नहीं बसाता। इस कारण इसकी हालत उस शंख की तरह होती है। यह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बातों में प्यार और संतोष ढूंढ़ता है। आप बातों से संगत के गुणों को नहीं पा सकते जिस तरह मिश्री–मिश्री कहने से मुँह मीठा नहीं होता, खाना–खाना कहने से भूख नहीं मिटती। धन–धन कहने से धनवान नहीं बन सकते। मनमुख संगत में आता है लेकिन बातों से ही सब कुछ प्राप्त करने की कोशिश करता है इसका कोई फायदा नहीं होता।

रुखां विचि कुरुख हनि दोवै अरंड कनेर दुआले।
अरंडु फलै अरडोलिआं फल अंदरि बीअ चितमिताले।
निबहै नाहीं निजड़ा हरवरि आई होइ उचाले।
कलीआं पवनि कनेर मों दुरमति विचि दुरंग दिखाले।
बाहरु लालु गुलालु होइ अंदरि चिटा दुबिधा नाले।
साध संगति गुर सबदु सुणि गणति विचि भवै भरनाले।
कपट सनेह खेह मुहि काले।।

भाई गुरदास जी खेतों के पास उगने वाली झाड़ियों का उदाहरण देते हैं कि अरंड की जड़ें ज्यादा गहरी नहीं होती, उसकी डालियों पर रंग–बिरंगे फल लगे होते हैं। फल दिखने में अच्छे लगते हैं लेकिन उसका भोजन नहीं बनता इसलिए यह बेकार होता है। कनेर के फूल भी दिखने में सुंदर होते हैं लेकिन इनमें खुशबू नहीं होती। जब कोई आदमी इन फूलों के पास जाता है तो खुशबू न पाकर पछताता है।

भाई गुरदास जी मनमुख को अरंड के फल और कनेर के फूलों की तरह बताते हैं। मनमुख बहुत आकर्षक गुणों वाले होते हैं वे अपनी ही प्रशंसा में लगे रहते हैं। वे सदा कहते हैं कि मुझे 'नाम' मिले बहुत समय हो गया है। मुझे सन्तमत में आए हुए बहुत साल हो गए हैं लेकिन वे अपने आप से कभी सवाल नहीं करते क्या वे सतगुरु की हिदायतों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

के अनुसार चले? क्या उन्होंने सतगुरु के कहे अनुसार अपने जीवन को ढ़ाला? क्या उन्होंने कभी डायरी रखी?

मेरा यह मतलब नहीं है कि आपको 'नामदान' मिलने का दिन याद नहीं रखना चाहिए लेकिन जैसे आप उस दिन को याद रखते हैं उसी समय से आपको अपने जीवन की पड़ताल करनी चाहिए।

मैं जब पहली बार रसल से मिला उसे याद होगा कि मैं किसी तरह की तारीखों के बारे में उत्तर नहीं दे सका। हम अब भी जिस जगह सतसंग के लिए जाते हैं पप्पू मेरे साथ ही जाता है। पप्पू तारीखें और जगह का नाम याद रखता है। मैं कृपाल का धन्यवादी हूँ जिसने मुझे कोई ऐसा आदमी दिया जो तारीखों को याद रखता है।

वण विचि फलै वणासति बहुत रसु गंध सुंगध सुहंदे।
अम्ब सदा फल सोहणै आड़ू सेब अनार फलंदे।
पीलू पेझू बेर बहुत केले ते अखरोट वणंदे।
मेलि न भावनी अक टिडि अंम्रित फल तजि अकि वसंदे।
जे थण जोक लवाईये दुधि न पीऐ लोहू गंदे।
साध संगति गुरु सबदु सुणि गणती अंदरि झाक झखंदे।
कपट सनेहि न थेहि जुड़ंदे।

प्यारेयो! भाई गुरदास कहते हैं जब वनस्पति खुश होकर फलती फूलती है तो बहुत से स्वादिष्ट फल संतरे, अंगूर, खजूर और अखरोट आदि देती है लेकिन टिड्डा (कीड़ा) उन स्वादिष्ट फलों को खाना या रस चूसना पसंद नहीं करता। टिड्डा (कीड़ा) आक के पेड़ पर बैठना पसंद करता है, आक के पेड़ का स्वाद बड़ा ही कड़वा होता है। इसी तरह से यहाँ मनमुख की तुलना आक के कीड़े से की गई है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मनमुख कपटस्नेह करते हैं। मनमुख चाहे सतगुरु की संगत में जाते हैं लेकिन वे अपना हिसाब लगाते रहते हैं मंजिल पर नहीं पहुँचते। जौंक गाय से चिपट जाती है यह केवल खून ही चूसती है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''चाहे कीड़ा फलों को खाना पसंद नहीं करता पेड़ का कड़वा रस पसंद करता है इसी तरह मनमुख भी सांसारिक सुखों में लिपटे रहते हैं। परमात्मा की भक्ति करना पसंद नहीं करते अगर वे सतगुरु की मौज में रहकर उसकी दया प्राप्त करें तो वे भी अपनी मंजिल पर पहुँच सकते हैं।''

गुरु नानक साहब फिर से समझाते हैं कि जिन्हें परमात्मा ने रहने के लिए अच्छे मकान, खाने के लिए अच्छे भोजन और सब तरह के ऐशो–आराम दिए है अगर फिर भी वे भक्ति नहीं करते तो परमात्मा उन पर बहुत अफसोस करता है। आप ऐसे लोगों की तुलना हाथी से करते हैं जो कई मण भोजन और गन्ना खा जाता है फिर भी गंदगी में रहना पसंद करता है। उसकी यह हालत देखकर परमात्मा अफसोस करता है कि इसे इतना कुछ दिया फिर भी इसने फायदा नहीं उठाया।

चाहे सुख हो! दुख हो! कैसी भी हालत हो हमें परमात्मा को याद रखना चाहिए; हमें परमात्मा से जुड़े रहना चाहिए।

* * *

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी

7,8,9,10,11 सितम्बर - 2011

28, 29, 30 अक्टूबर - 2011

25, 26, 27 नवम्बर - 2011

23, 24, 25 दिसम्बर - 2011

04, 05, 06 फरवरी - 2012

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com